अभिव्यक्ति

जीवन की इन प्रकाश हीन गलियों में,
स्वयं को ढूँढता फिरता हूँ मैं।

कौन हूँ मै, कहाँ से आया हूँ जब यह विचार करता हूँ मै,
बन्धनों में फँसे हुए अपने कर्मो की बेबसी में सिसक सिसक के रह जाता हूँ मैं।
क्या हूँ मैं, क्या मुझे करना है यह कौन मुझे बताएगा।
हे मेरे राम! मेरे इस बुझे हुए दीपक को कौन प्रकाशमान कर जाएगा।।

जब अपने इन बंधनों का विचारों से भी भेदन नहीं कर पाता हूँ मैं,
राधे कृष्ण राधे कृष्ण कहकर उस परमात्मा को पुकारता हूँ मैं।
कौन मुझे मेरी पहचान बताएगा।
हे मेरे राम! जन्मों से संतप्त इस चित्त को चैन कब आएगा।।

जब भी कुछ साहस करके प्रयत्नशील होता हूँ मैं,
इन वासनाओं के जंजाल में फँसकर फिर गिर जाता हूँ मैं।
जीवन की इन उल्झी गांठों को कौन आकर सुल्झाएगा।
हे मेरे राम! कौन मुझे अज्ञान के अँधकार से प्रकाश की ओर ले जाएगा।।

इस नश्वर संसार में कुछ भी स्थिर न ढूँढ पाता हूँ मैं,
इस जीवन को समझने के प्रयास में बार बार फिसल जाता हूँ मैं।
इस उद्दण्ड मानव को कौन मार्ग दिखाएगा।
हे मेरे राम! कौन मुझे मृत्यु से अमरत्व की ओर ले जाएगा।।

ढूँढता हूँ प्रसन्नता, ढूँढता हूँ चैन,
पर इस क्षणभंगुर संसार को समझने के प्रयत्न में हारकर रह जाता हूँ मैं।
बस इतना जानता हूँ कि अब तो तू ही मुझे मार्ग दिखाएगा।
हे मेरे राम! तू कब अपनी कृपा इस जीव पर बरसाएगा।।

-- मोहरहित